हिन्दी का पुर्नस्थापन

दक्षिण भारत की चार भाषाओं के अतिरिक्त भारत की सभी भाषाओं का उद्‌गम संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश वंशावली से हुआ। इस भाषा समूह की तरह हिन्दी का इतिहास लगभग 1300 वर्ष पुराना है। परिव्राजकों तथा संतों की भाषा होने के कारण हिन्दी अखिल भारतीय भाषा बनी, जन भाषा बनी। अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक प्रचलित हुई।

हिन्दी को भारत की स्वभाषा बनाने की स्वीकृति में बंगाल, गुजरात, तथा महाराष्ट्र के मनीषियों का विशेष योगदान रहा है। भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन में जब स्वदेशी का उद्‌घोष हुआ, तो स्वामी दयानन्द सरस्वती, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महामना मदन मोहन मालवीय, महात्मा गान्धी जैसी विभूतियों के महनीय योगदान से हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में देखा जाने लगा। जैसे-जैसे स्वतंत्रता आन्दोलन गतिशील हुआ, अंग्रेज़ी सत्ता को हटाने के साथ ही अंग्रेज़ी भाषा को हटाने की बात भी ज़ोर पकड़ने लगी।

तत्कालीन भारत में प्रशासन तथा उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी बन चुकी थी। राष्ट्रीय भावना को बलवती बनाने के लिए विद्यापीठों की स्थापना की बात चली। जब *प्रथम विद्यापीठ,* गुजरात विद्यापीठ, की स्थापना हुई, तो गान्धी जी का सुझाव था, कि वहां शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो। हिन्दी को विज्ञान की भाषा बनाने की दृष्टि से नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा विज्ञान-कोश की रचना की गई, परन्तु विश्वविद्यालयों में उसका प्रयोग नहीं किया गया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में सभी विषयों को हिन्दी माध्यम से पढ़ाने की बात तो चली, परन्तु उसे नहीं अपनाया गया। जैसा बार-बार बताया गया है, जन-भाषा माध्यम बिना, जन साधारण ज्ञान-विज्ञान से वंचित होता चला आ रहा है।

गान्धी जी स्वभाषा को उतना ही महत्व देते थे, जितना राजनैतिक स्वतंत्रता को। उन्होंने 1918 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में कहा, *यह भाषा का विषय बड़ा भारी और महत्वपूर्ण है। यदि सब नेता सब काम छोड़कर इसी में लगे रहें तो ठीक है।* महात्मा गान्धी हिन्दी के प्रबलतम समर्थक थे, उन्होंने लिखा, *अगर मेरे हाथों में तानाशाही सत्ता हो तो मैं आज ही विदेशी माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा को बन्द कर दूं। सारे शिक्षकों और प्रोफ़ेसरों से यह माध्यम तुरन्त बंद करा दूं, या उन्हें बर्खास्त करा दूं। मैं पाठ्य पुस्तकों की तैयारी का इन्तज़ार नहीं करूंगा, वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे अपने-आप चली आएंगी। यह एक ऐसी बुराई है, जिसका तुरन्त इलाज होना चाहिए।*

भारत स्वतंत्र हुआ, नया संविधान बना, उसमें सर्व सम्मति से हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया। हिन्दी, अलगाववादी राजनीति का शिकार हुई, हिंसात्मक हड़तालें हुई, लोगों ने आत्मदाह किया, ऐसे वातावरण में हिन्दी पर प्रतिबंध लगा दिया गया, कि यदि एक भी प्रदेश ने इसका विरोध किया तो उसे राजभाषा नहीं बनाया जायगा।

हमें हताश होकर नहीं बैठना है, हमें अपनी भूलों से सीखना है। प्रगति का मार्ग सरल रेखा में नहीं होता है, उसमें भूल-भुलैयां तथा उतार-चढ़ाव आते हैं। हमें रचनात्मक कार्यों द्वारा हिन्दी को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी भाषा बनाना है। खेद का विषय है कि सरकारों का ध्यान इस तरफ़ नहीं है। अतः प्रबुद्ध तथा संवेदनशील नागरिकों द्वारा यह काम प्रारम्भ करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि यदि हमने छोटे स्तर पर भी इसे सफल कर के दिखा दिया तो, सरकारी सहायता भी उपलब्ध होगी। इस संदर्भ में दो कामों के उदाहरण नीचे दिए जाते हैं। *पहला उदाहरण है, भारत की संस्था तामिल नादु साइन्स फ़ोरम का, दूसरा अमेरिका के प्रवासी भारतीयों की संस्था इन्डीकोर का।*

तामिल नादु साइन्स फ़ोरम संस्था का उद्देश्य विज्ञान को लोकप्रिय बनाना था। सन् 1980 में मद्रास विश्वविद्यालय के कुछ शोध छात्रों द्वारा इसकी स्थापना की गई थी। फ़ोरम का काम था, अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से वैज्ञानिक विषयों पर व्याख्यानों का आयोजन। *सन् 1987 में फ़ोरम के उद्देश्यो, कामों तथा कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण मोड़ आया जब ग्रामीण बच्चों के लिए तमिल भाषा में एक वैज्ञानिक पत्रिका, थुलिर, का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।* थुलिर का मूल्य 5 रुपये था, स्कूलों के अतिरिक्त विद्यार्थी भी चंदा करके उसे ख़रीदते थे, इस प्रकार उसकी 10,000 प्रतियां बिक जाती थी। फ़ोरम ने ग्रामीण बच्चों के लिए विज्ञान शिविर आयोजित किये, इनमें स्कूल के विज्ञान शिक्षकों के अलावा, विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक तथा विद्यार्थी भी भाग लेते थे। सन् 1991 में फ़ोरम ने समाज के वंचित वर्ग के लिए साक्षरता अभियान, तथा रात्रि-पाठशालाओं की व्यवस्था की, सहकारी बचत संस्थाएं बनाई। सदस्यों प्रति सप्ताह पांच रुपये जमा करक, ज़रूरतमंद सदस्यों को कम ब्याज पर उधार दिया गया। संतोष की बात है कि सभी उधार चुकता कर दिया जाता है।

आगामी वर्षों में फोरम ने 100 से अधिक विज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित कीं, अनेक विडियो बनाए, तथा बालकों के लिए विज्ञान मेले आयोजित किए। मेलों में विज्ञान के प्रयोग, प्रकृति निरीक्षण, गणित की पहेलियां, प्रतियोगिताएं, वैज्ञानिक प्रदर्शन तथा मनोरंजक नाटक इत्यादि शामिल होते हैं। फ़ोरम द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर बाल विज्ञान-कांग्रेस

आयोजित की जाती है, इसमें हज़ारों विद्यार्थी तथा सैकड़ों शिक्षक भाग लेते हैं, मूर्धन्य वैज्ञानिक इसमें आकर बच्चों का उत्साह बढ़ाते हैं, उनके प्रश्नों के उत्तर देते हैं। मतदाताओं की तलाश में अब नेता भी विज्ञान मेलों के चक्कर लगाने लगे हैं।

दूसरा उदाहरण अमेरिका की संस्था इन्डीकोर का है। इसकी स्थापना सितम्बर 2002 में हुई थी। इस का उद्देश्य प्रतिभाशाली भारतवंशी युवावर्ग को आधुनिक भारत के यथार्थ से परिचित कराना था। स्वयंसेवकों को संगी (फ़ैलो) कहा जाता है, उन्हें एक साल भारत में सेवा कार्य करना होता है। अमेरिका से भारत का वापसी टिकिट तथा स्वास्थ्य बीमा के अलावा उन्हें 2000 रुपये तक की मासिक छात्रवृत्ति मिलती है, वे दलितों के साथ झुग्गी-झोपड़ियों में रहते हैं।

इंडीकोर की संस्थापक सोनल शाह हैं, जब वे दो वर्ष की थी, उनके माता पिता उन्हें लेकर अमेरिका आ बसे थे। 35 वर्षीय सोनल एक प्रतिभ अर्थशास्त्री हैं, उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनकी मान्यता है कि झुग्गी-झोपड़ियों तथा गन्दी बस्तियों में रहने वालों के मुरझाये चेहरों के पीछे प्रतिभा छिपी है, यदि उन्हें सहारा मिल सके तो वे प्रतिभावान बन सकते हैं। सोनल की छोटी बहिन रूपल तथा भाई आनन्द, सोनल जैसे प्रतिभाशाली हैं, वे अच्छी नौकरियां छोड़कर एक वर्ष के लिए भारत गए, 100 से अधिक ग़ैर-सरकारी सेवा-संस्थाओं की छान-बीन की। कुछ संस्थाओं को चुना, उनके साथ मिलकर काम करने का निश्चय किया।

एक वर्षीय कार्यक्रम का प्रारम्भ एक महीने के प्रशिक्षण से होता है, इसमें उन्हें स्थानीय भाषा, लोकसंस्कृति सिखाई जाती है, ग़रीबी समस्याओं के बारे में बताया जाता है। सभी काम स्थानीय भाषा में होते हैं। संगियों का चुनाव आसान नहीं है, भारतीय मूल के स्वस्थ तथा मेधावी स्नातक युवा-युवतियों को ही चुना जाता है। पिछले वर्ष 60 युवाओं में से 9 को, पांच लड़कियों और चार लड़कों को, चुना गया। उनकी आयु 21 से 26 वर्ष के बीच में थी। उनके कामों के कुछ उदाहरण हैं।

टोरन्टो विश्वविद्यालय में शिक्षित वातावरण अभियांत्रिकी की स्नातक 21 वर्षीय शेज़ीन सुलेमान और 21 वर्षीय राधिका सिंह पाकिस्तान सीमा के समीप कच्छ के लुधिया गांव की झोपड़ी में हरिजनों के साथ रहीं। *मानव साधना* संस्था के तत्वावधान में पेय जल की योजना पर काम किया। 21 वर्षीय संजय भट्ट ने मेडीकल कॉलेज जाने के पहले, एक वर्ष के लिए गुजरात के आदिवासियों के बीच सेवा कार्य किया। अमेरिका लौटकर, चिकित्सा की पढ़ाई पूरी करके वे सेवाकार्य के लिए भारत आना चाहते हैं। 22 वर्षीय कृष्णन उन्नीकृष्णन हारवर्ड विश्वविद्यालय के स्नातक हैं, उन्होंने मुम्बई की गंदी बस्तियों में *आकांक्षा* संस्था के अन्तर्गत काम किया। *प्रसन्नता का विषय है कि अमरीकी भारतवंशियों ने इंडीकोर की संस्थापक सोनल शाह को सन् 2004 के व्यक्ति का सम्मान दिया है।*

वर्तमान भारत के भ्रष्ट वातावरण में फ़ोरम तथा इन्डीकोर जैसी संस्थाओं का कार्य प्रासंगिक है। प्रारंभ में फ़ोरम का उद्देश्य शिक्षित वर्ग में विज्ञान प्रचार था, परन्तु दलित वर्ग के संपर्क से, इस वर्ग का सबलीकरण, फ़ोरम का प्राथमिक उद्देश्य बना। इन्डीकोर का युवावर्ग, प्रवासी भारतीयों का ही नहीं, अमेरिका निवासियों का श्रेष्ठतम वर्ग है। व्यक्तिगत विकास के प्रलोभनों को त्याग कर, दरिद्रसेवा उनकी प्राथमिकता बनी। अमेरिका लौटकर वे अपने जीवनी के लिए काम करेंगे, परन्तु वंचित वर्ग की सेवा उनके व्यक्तित्व में आजीवन बनी रहेगी।

भारत को अपनी प्राथमिकतायें निर्धारित करनी होंगी। भारत को विश्व का अग्रगण्य राष्ट्र बनाने के लिए, हमें प्रत्येक नागरिक को विकास का समान अवसर प्रदान करना होगा। आज हिन्दी वंचित वर्ग की भाषा है, उन्हीं के समान वह कुपोषित, तिरस्कृत तथा आधुनिक ज्ञान की अभिव्यक्ति में असमर्थ है। हिन्दी को हमें एक ऐसी भाषा बनाना होगा जो जनता की सभी आवश्यकतायें पूरी कर सके, उसके द्वारा सभी प्रकार का आधुनिक ज्ञान प्राप्त हो सके। हिन्दी को एक सम्पूर्ण भाषा बनाने के लिए भारत के प्रबुद्ध वर्ग को हिन्दी माध्यम अपनाना होगा। *यह काम कठिन है, परन्तु इस के अतिरिक्त कोई और उपाय नहीं है।* मैंने अनेक वैज्ञानिकों को देखा है, जो उच्च शिक्षा के लिए रूस, जर्मनी, फ़्रान्स आदि देशों में गए, उनकी भाषायें सीखी, और उन में शोधपत्र लिखे, तो क्या यह काम हिन्दी में नहीं किया जा सकता है?

कहा जाता है कि हम आज भी, मैकाले की उस शिक्षा पद्धति का अनुगमन कर रहे हैं, जो हमें गुलाम रखने के लिए बनाई गई थी। स्वतंत्र भारत के अभ्युदय के लिए हमें शिक्षा नीतियों में परिवर्तन करने होंगे। परिवर्तन लाने का एक कमख़र्च वाला उपाय है: व्यावसायिक उपाधियों के लिए, चुनिंदा विषयों में, शिक्षा के अन्तिम वर्ष में विद्यार्थियों को सरकारी छात्रवृत्ति देकर, इंडीकोर संगियों की तरह किसान मज़दूरों के साथ रहकर क्षेत्र कार्य (field work) को अनिवार्य बनाना। इसके द्वारा वे ज़मीनी सच्चाई जानेंगे, और समस्याओं को सुलझाने में सफल होंगे। इंडीकोर संगियों की भांति वे विदेश नहीं लौटेंगे, वे देश की स्थायी निधि होंगे। देश में विकास का वातावरण बनेगा, भ्रष्टाचार दूर होगा, और सामाजिक सद्भावना विकसित होगी।

राम चौधरी